प्रवेशिका

छठे दशक के बाद कविता में तत्कालिन व्यक्ति के विरूद्ध आवाज उन्होंने प्रारंभ हुई और वह आवाज़ किसी और विधा की नहीं, अपनी नवगीत नहीं थी। तदर्पण प्रवचनितवादी कवि ने नई कविता के नाम पर छायाभाषा का ही नया संस्करण प्रस्तुत किया। निरंतर होती नवगीत आज समय की माँग तथा युग चेतना के समकालीन संस्कृति के कारण समकालीन कविता के रूप में मुनुवृत्त की सबसे बड़ी पक्षपात सिद्ध हुई। इसमें शोषित वर्ग की स्थिति के वास्तविक कारणों को स्पष्ट करने, वर्तमान शासन-व्यवस्था की नीतियों को उजागर करने नए उद्योगपतियों तथा बड़े किसानों की सामंती मनोवृत्ति को विवर्णार्थ करने, राजनीतिक स्तर पर समाजवादी सिद्धांतों का महत्व सिद्ध करने, मानवाधिकारों के लिए लड़ने, सहानुभूति तथा पश्चात्तात्त्व के लिए दया की अपेक्षा अधिकार भावना को मजबूत करना तथा मनुष्य के भीतर दूसरे मूल्यों की विवाहितियों के स्पष्ट करने, महानगरी सम्पत्ति के विषय उजागर करने, नारी-वृत्ति के अंतर्विद्वच्छ को समझने और अनेक वर्तमान संदर्भ पर आधारित, सामाजिक, राजनीतिक हड़तल से परिपक्व विचार व्यवस्था करते हुए नवगीत नए संदर्भ, नए परिवेश में उल्लक्षात नामात्मा आई है। बिस्मिल समाज, सहযोग, सामाजिक के स्थान पर टकराव, विरोध, असहमति, अस्वीकृति एवं द्वितीय गठन का स्वर मिला है।

इसी परिप्रेक्ष्य में इसका सिद्धांत उल्लक्षात नवगीतकारों की एक लंबी श्रृंखला है, वहां शोध कार्य की हद्दी से केवल चह नवगीतकारों को लेकर उनके एक-एक काव्य के शैली वैज्ञानिक प्रतिमाओं के आधार पर शैली वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। संदर्भ प्राप्तियां बुध विवेचन के काव्य ‘उद्धरण हो तुम’ से भी उद्वाहण लिए गये हैं। अन्य काव्य के रूप में सात गीत-वर्ण (धर्मवैरिया भारती), सौमध्य कुन वसी (रवीद्र भ्रमर), आहत है (उमर लेलेड), सुंदर निरंजन है (नागरायण लाल परमार), तथा शोष जैसे के लिए (राम सेनार) को लिया गया है। शोध-प्रवचन में शैली वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में शैलीवैज्ञानिक प्रतिमाओं-च्यमन, विचलन, समांतरा को आधार बनाया गया है।

नवगीतों पर पूर्वी में हुए काव्यों में मंडलता तिवारि का शोध-प्रवचन (1994) ‘नवगीत का रचना संसार-एक अनुशोधन’ है, जिसमें उन्होंने कुछ संदर्भित नवगीतों का भाव-पक्ष का लेकर उनका मूल्यांकन किया है। 'नवगीत के प्रतीक : नए अर्थ की श्रृंखला' शैविक तेंदुलकर ने अपेक्षा सारांश मिश्र ने कुछ प्रतीकों के भावस्त्र में नए अर्थ का विश्लेषण किया है और 'क्रिया का मानवीय रंग-तोक : नवगीत' शैविक तेंदुलकर ने सूर्य प्रकाश सिंह ने प्रकृति के माध्यम से नए विम्बों का विश्लेषण बड़ी सजगता से किया है।
प्रस्तुत प्रवचनः सात अध्यायों में कर्मकृत है, जिस में प्रथम अध्याय में उत्तरार्थायावादी काव्य बोधः परंपरा एवं नवीनता, नवगीतों का सामान्य स्वरूप-परंपरा एवं नवीनता तथा भाषा का प्रयोगमगत पक्ष का अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में जितने नवगीतकारों का सामान्य परिचय संभव हो सका है, उनके भाषिक गुणों के आधार पर उनका मूल्यांकन करने का प्रयास हुआ है।

तृतीय अध्याय में शब्दों के चयन का आधार-स्रोत रखा गया है। जिसमें तत्त्व, तद्भव विदेशी, ध्वनियात्मक एवं आंचलिक शब्दों में वर्णकर्तार हुआ है।

चतुर्थ अध्याय में मानक रूपों से हटकर किया गया प्रयोग विचलन को लेकर काव्यों में प्रयुक्त ध्वनि, शब्द, अर्थ, वाक्य और प्रौद्योगिकी-विचलन को विशेषज्ञता किया गया है।

पंचम अध्याय ‘समांतरता ’ को विशेषज्ञता करते हुए काव्य में भाषिक आवृति के आधार पर ध्वनि, शब्द, अर्थ, वाक्य और प्रौद्योगिकी-समांतरता के रूप में विभाजित है।

काव्य में भाषिक गुणों के आधार पर कवि की अपनी विशिष्ट शैली के रूप में पहचान होती है। संरचित काव्यों में प्रयुक्त भाषिक रूपों की विविधताओं का अध्ययन पदार्थ अध्ययन में हुआ है।

सप्तम अध्याय में नवगीतों की शैली में समष्टि और व्यवहारी शैली का मूल्यांकन एवं उपसंहार को रखा गया है।

'नवगीतों के शैली वैज्ञानिक अध्ययन’ से भविष्य में नवगीतों के शैलीवैज्ञानिक अध्ययनों के प्रति लोगों के मन में सूक्ष्मता आयमों पर अध्ययन का अवसर प्राप्त होगा और हिंदी नवगीत को विश्व साहित्य में विशेष स्थान दिलाने की दिशा में यह शोध प्रवंध सहायक साबित होगा, ऐसा विचार है।